नाटक

नरमेध

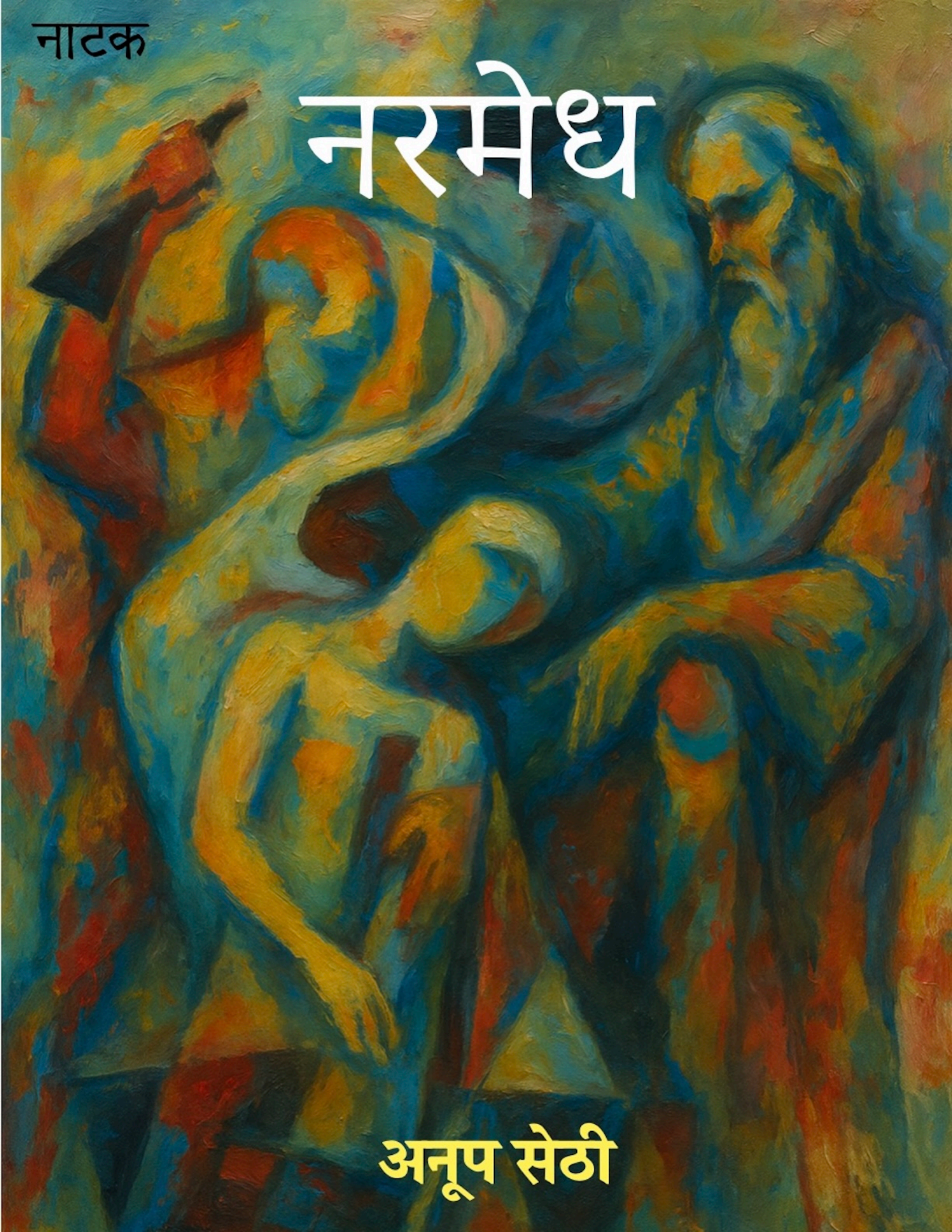

अनूप सेठी

नरमेध

नाटक

अनूप सेठी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2025

© अनूप सेठी

पात्र

क / पहले दृश्य में हरिश्चंद्र, अंतिम दृश्य में जमदग्नि, हरिश्चंद्र, वरुण /

ख / पहले दृश्य में नारद, वरुण, इंद्र, अंतिम दृश्य में वसिष्ठ /

रोहित

शुन:शेप

वृद्ध

शुन:शेप की मां

अजीगर्त

शुन:पुच्छ

श्यामल

कीकर

महीराग

कीर्तिकेसर

सामग्रीव

दो राजपुरुष

दो व्यक्ति / सेवक /

मध्यांतर छटे दृश्य के बाद किया जा सकता है

दृश्य एक

(लगभग सादा मंच। नाटक के पूर्वाभ्यास का आभास, इसलिए सब कुछ अनौपचारिक। "क" संवाद पढ़ रहा है। "ख" मंच व्यवस्था में व्यस्त रहने का प्रयत्न कर रहा है। अनौपचारिक क्रिया-व्यापार में अतिनाटकीय अभिनय की झलक।)

क: सम्राट हरिश्चंद्र हूं मैं

यह राज्य यह प्रजा

यह वैभव यह श्री

इसका अधिपति हूं।

कैसा है संतान का सुख

जान नहीं पाया अब तक

निज सत्ता का प्रतिरूप रचने का संतोष नहीं पाया

राज्य सम्राट का सत्ता होकर भी ...

नहीं नहीं

राज्य सत्ता का सम्राट होकर भी।

(मुकुट उतारने का अभिनय करता है।)

यह किरीट

यह राज्य भार कब तक उठाऊंगा

कौन होगा मेरे वंश का संवाहक।

तुम्हारे श्वास के साथ ही

हरिश्चंद्र! टूट जाएगा तंतु

शेष हो जाओगे तुम

और यह राज्य तुम्हारा ...

ख: (काफी देर से क को टोकने की कोशिश कर चुका है,

आखिर रोक ही देता है।)

शेष होते महाराज आप तनिक चुप होंगे

मुझे मंच व्यवस्था के बारे में कुछ सोचना है

क: ये क्या मज़ाक है

ख: मज़ाक नहीं मैं पूरी गंभीरता से कह रहा हूं

क: अपनी ही हांके जा रहे हो। मेरी मुसीबत नहीं समझ रहे।

मुझे अभी तक डायलॉग याद नहीं हुए

ख: तो मैं क्या करूं। ये डायलॉग याद करने की जगह नहीं है और अब वक्त भी

कहां बचा है

क: तभी तो कह रहा हूं यार। मुझे ज़रा क्यू दो। स्टेज का काम बाद में करवा दूंगा

ख: अजीब मुसीबत है

सुनो बाकी लोगों को आने दो तब कर लेना तुम रिहर्सल

क: नई नई यार

मेरे अच्छे दोस्त बस थोड़ी ही देर की बात है

ख: अच्छा भई। चलो लाओ। कहां है कापी?

क: ये लो

मैं शुरू करता हूं

... हरिश्चंद्र...

ख: जहां छोड़ा है वहीं से शुरू करो न

क: अच्छा अच्छा ... कहां छोड़ा था …

हां.. शेष हो जा..

ख: आगे चलो आगे

क: (गला साफ करने के बाद संवाद पढ़ता है)

शिला सा निष्प्राण वैभव

अपने ओज से मंद करता है नित्य

इसलिए मैं आज राज्य मेरे

त्याग तुमको एकांत वरता हूं

ख: कैसी विडंबना है

क: ये क्या अरे यार तुम पूरा डायलॉग नहीं पढ़ सकते?

मेरा टेंपो कैसे बनेगा

ख: तो पूरा पढ़ देता हूं

(तेज़ी से सारा संवाद पढ़ जाता है)

आर्य पुत्र यह क्या सुन रहा हूं ब्रह्मांड गूंजता है तुम्हारी व्यथा से दु:कथा में व्याकुल नरेश अरण्यवासी होगा कैसी विडंबना है

क: सचमुच ही कैसी विडंबना है

ख: अब क्या हो गया? मैंने ठीक तो पढ़ा

क: तुम ऐसे घास काटोगे तो ... डायलॉग को डायलॉग की तरह नहीं पढ़ सकते?

और ये भी तो पता चले

ये संवाद किसने कहा ?

हां बोलो

ख: अगले से ठीक कर लूंगा। तुम पढ़ो। बस संवाद के साथ नारद मुनि की एंट्री हो गई है

क: मैं शुरू कर रहा हूं। अब गड़बड़ मत करना

प्रणाम मुनिवर नारद

आशीष दें

असमय सन्यास वरूंगा।

निर्वंशी किरीट यह वहन नहीं होता

निपूता संबोधन अब सहन नहीं होता।

आज्ञा दें मुनिवर

जाता हूं